

पद - मीरा

classmate

Date _____

Page _____

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?
(ज) मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती की है - प्रभु जिस प्रकार आपने द्रोपदी का वस्त्र बदलकर भरी सभा में उसकी लाज रखी, नरसिंह का रूप धारण करके दुर्योधन का मार कर प्रह्लाद को बचाया मगरमच्छ ने जब हाथी को अपने मुँह में ले लिया तो उसे बचाया और पीड़ा भरी हरी। हे प्रभु! इसी तरह मुझे भी संकट से बचाकर पीड़ा मुक्त करे।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ज) :- मीरा का हृदय कृष्ण के पास रहना चाहता है। उसे पाने के लिए इतना अघोर है कि वह उनकी सेविका बनना चाहती

हैं। वह बाम - बगीचे लगाना चाहती है जिसमें श्री कृष्ण घूमें, कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गीत गाएँ ताकि उनके नाम के स्मरण का लाभ उठा सके। इस प्रकार वह कृष्ण का नाम, भावभक्ति और स्मरण की जगह अपने पास रखना चाहती है।

इ. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप - सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

(ज) :- मीरा ने कृष्ण के रूप - सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके सिर पर मोर के पंखों का मुकुट है, वे पीले वस्त्र पहने हैं और गले में बँजरी फूलों की माला पहनी है, वे बाँसुरी बजाते हुए गाधेँ चराते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं।

4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

(ज) :- मीराबाई की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है, जो राजस्थानी,

ब्रज और गुजराती का मिश्रण है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है, पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक आदि अलंकार का भी प्रयोग किया गया है।

5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

(ज) :- मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वह सेवक बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाम बेगीचे लगाना चाहती है। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती है, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को कृष्ण से मिलकर उनके दर्शन करना चाहती है।

(ख) काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

1. हरि आप हरो जन री भीर।
 द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
 भगत कारण रूप नरहीरे, धर्यो आप सररीर।

(ज) :- इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रूप का वर्णन किया है। वे कहती हैं - "हे हरि ! जिस प्रकार आप अपने भक्तजनों की पीड़ा दरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रूप धारण कर आपने रक्षा की, उस प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। 'र' ध्वनि का बारबार प्रयोग हुआ है तथा 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है।

2. बूढ़ो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
 दासी मीरौ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

(ज) :- इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण से अपने दुख दूर करने की प्रार्थना की है। हे

भक्त वत्सल जैसे - इबते गजराज को बचाया और उसकी रक्षा की वैसे ही आपकी दासी मीरा प्रार्थना करती है कि उसकी पीड़ा दूर करो। इसमें दास्य भक्तिरस है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।

३. चाकरी में दरसन पास्युं, सुमरण पास्युं खरची।
भाव भगती जागीरी पास्युं, लीलुं बातें सरसी।

(ज) - इसमें मीरा कृष्ण की चाकरी करने के लिए तैयार है क्योंकि इससे वह उनके दर्शन, नाम, स्मरण और भावभक्ति पा सकती है। इसमें दास्य भाव दर्शाया गया है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार और कुछ तुकान्त शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

भाषा अध्ययन

1. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए -

उदाहरण - भीर - पीड़ा / कष्ट / दुःख; ; री - की
 चीर वस्त्र बूढ़ता इबना
 धर्यो रखना लगास्युं लगाना
 कुण्जर दायी घणा बहुन
 बिन्दरावन वृंदावन सरसी अच्छी
 रहस्युं रहना दिवड़ा ददय
 राखो रखना कुसुम्बी लाल (केसरिया)